आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-125 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | सितंबर 2024 | मूल्य - 5 रूपए

पुल के नीचे पार्क निर्माण से सड़क और कामकाजी बच्चे हुए गमगीन, पूछा अब कहां जाएं?

बालकनामा रिपोर्टर, किशन, सरिता, शंभू, हंसराज, काजल

जीवन की डगर बड़ी कठिन होती है। इस जीवन को सही प्रकार से बिताना, मनुष्य के लिए एक बहुत बड़ा विषय है अर्थात जीवन की इस गाड़ी को चलाने में हमें अनेकानेक समस्याओं से गुजरना ही पड़ता है। इस जीवन को गुजारने के लिए तीन चीज बड़ी महत्वपूर्ण मानी जाती है, जैसे रोटी,कपड़ा और मकान। वैसे अब हम यहाँ जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक 'मकान' पर बात करने वाले हैं, यदि आप अपने स्वयं के घर में या किराए के मकान में रह रहें है तो आप कुछ मात्रा में सुख-शांति का जीवन यापन कर रहे होंगे। परन्तु यदि आपके पास रहने के लिए कोई आसरा या छत जैसी कोई सुविधा ना हो तो आप कहां पर रहेंगे? यह एक साधारण सी बात है कि जब तक आपके पास एक किराए का कमरा या खुद का घर ना हो तो आप सड़कों पर कई परेशानियों के साथ भी वहां अपना जीवन यापन करेंगे। ज्ञात हो, यहाँ हम उन लोगों पर एवं उन बच्चों के विषय पर बात करने जा रहे हैं जो बच्चे खुले आसमान के नीचे, सड़क के किनारे या फ्लाई ओवर के नीचे अपना जीवन बिता रहे हैं। जब बालकनामा के पत्रकार दक्षिणी दिल्ली में दौरा करने के लिए पहुंचे और उन स्थानों के बारे में जानने का प्रयास किया जिन स्थानों पर वर्तमान में सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने परिवारों के साथ सड़क के किनारे या फ्लाई ओवर जैसी सुविधा के नीचे अपना जीवन बिता रहे हैं। फ्लाई ओवर के नीचे अनेक बच्चों से बात करने के बाद एक-एक करके बच्चों ने अपनी बात को पत्रकारों के समक्ष रखा। 14 वर्ष के बालक सुमित (परिवर्तित नाम) ने कहा की, जैसा कि सभी जानते हैं की दिल्ली को 'स्वच्छ दिल्ली' बनाने का कार्य प्रक्रियाधीन है, ऐसे में सड़क के किनारे फ्लाई ओवर के नीचे अनेक परिवार रह रहे हैं पर वहआखिर जाएं तो जाएं कहां? इस फ्लाई ओवर के नीचे डेढ़ सौ से अधिक परिवार रहते हैं जो की तरह-तरह का काम करते हैं। कुछ परिवार है, जो नग बेचने का कार्य करते हैं और अधिकांश परिवारों में बड़े एवं बच्चे मांगने का कार्य करते हैं। इन्हीं कामों से हमारे परिवारों का पालन-पोषण होता है। 15 वर्ष की बालिका रोशनी (परिवर्तित नाम) ने बताया की 'वर्तमान में एक बहुत ही बड़ी समस्या से हमें गुजरना पड़ रहा है क्योंकि कुछ दिन पहले रात के समय कुछ पुलिसकर्मी आए और फ्लाई ओवर के नीचे जितने भी परिवार रह रहे हैं सभी परिवार को अपने-अपने सामान के साथ पुलिस थाने लेकर गए

और सभी परिवारों को फ्लाई ओवर के नीचे से हटाने के लिए आदेश दिए और कहा कि उस स्थान पर सड़कों के केंद्र में पार्क क्षेत्र का निर्माण होगा, जिसमें फूल-पौधे आदि लगेंगे इसलिए यहाँ से हमें हटना होगा ' 13 वर्ष के बालक रोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया यह बात सोच-सोच कर हम अधिक चिंतित है की हम आखिर जाएं तो कहां जाएं? जैसा कि इस स्थान के नजदीक कई रैन बसेरे स्थित है। पुलिसकमीयों ने हमें रैन बसेरों में भी जाने के लिए कहा, परंतु रैन बसेरों का माहौल कुछ ठीक नहीं रहता है। वहाँ हर कोई खुले में रहते हैं और कोई बंद कमरा जैसी कोई सुविधा भी नहीं है, कोई भी वहां पर खुले आम अश्लील हरकतें करने लग जाते हैं जिससे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा यह भी एक समस्या है कि वहां अपना सामान खुले में रखना पड़ता है और वहां पर सामान की सुरक्षा के लिए को उचित प्रबंध नहीं होता है जिसके परिणामस्वरूप वहां अधिकतर सामान चोरी भी हो जाते हैं। उपरोक्त इन समस्याओं के कारण ही हम रैन बसेरों में जाना उचित नहीं समझते हैं। 17 वर्ष की बालिका सोनिया (परिवर्तित नाम) ने बताया की, इस स्थान पर जितने भी परिवार रहते हैं सभी गरीब परिवार है। जैसा कि, सभी को इस स्थान से हटाया जा रहा है तो इस सन्दर्भ में पुलिस अधिकारीयों का सुझाव है कि आप सभी नजदीकी गांव में स्थित किराए के मकानों में रहने लग जाए परंतु हम सभी यहाँ अधिकतर नग और मांगने के लिए सड़कों पर कार्य करते हैं। इन कार्यों से जितना भी पैसा आता है उन पैसों से केवल घर का खर्चा ही चल पाता है। ऐसे में हम इस स्थान पर इस कारण रहते हैं कि इन स्थानों पर समस्याओं को तो झेलना पड़ता है परंतु कमरे का किराया नहीं देना पड़ता, यदि हम किराए के कमरे में रहने जाएं तो हमारे पास इतने पैसे नहीं की हम हर महीने कमरे का किराया दे सकें, इस कारण अभी भी हम सभी परिवार संकट और सोच-विचार में डूबे है की आगे हमारा क्या होगा? हम बच्चों का और फ्लाई ओवर के नीचे जितने भी परिवार मौजूद है उन सबका कहना है कि, हर साल जब ठंड आती है तो अधिक ठंड होने के कारण सरकार की तरफ से फ्लाई ओवर के नीचे और सड़कों के किनारे जितने भी व्यक्ति एवं बच्चे मौजूद रहते हैं उन सभी के ठंड से बचने के लिए सड़कों के किनारे छोटे-छोटे तंबू बना दिए जाते हैं। अतः हम सब परिवारों का कहना यही है कि, जैसे हर साल ठंड के समय तंबू की सुविधा हम लोगों को प्रदान की जाती है वैसे ही यदि सरकार की तरफ से हम सभी को तंबू बनाकर आश्रय की सुविधा मिल जाए तो हमें अनेक परेशानियों से नहीं जूझना पड़ेगा।

बंजारा मार्केट की सड़कों के गड्ढों में मिट्टी भरने का काम कर रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर- राजकिशोर, बातूनी रिपोर्टर- बादशाह

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम की जलवायु क्षेत्र की बस्तियों में गए तो वहां जाकर पता चला कि वहां कुछ ऐसे बच्चे हैं जो की बंजारा मार्केट में साफ-सफाई का काम करते हैं और कई बच्चे तो दुकान लगाने का काम भी करते हैं। उन बच्चों से जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर ने बात की तो दो बच्चे रास्ते से बंजारा मार्केट की ओर कुछ सामान लेकर जा रहे थे, बंजारा मार्केट में काम करने सन्दर्भ में जब हमारे रिपोर्टर राज किशोर ने उनसे थोड़ी बातचीत की तो उनसे पता चला कि वह दो बच्चे बंजारा मार्केट में जो गड्ढे हो जाते हैं, वहाँ मिट्टी भरने के लिए जा रहे थे। बच्चों ने बातचीत के दौरान बताया की वो यह काम अपनी मर्जी से करते हैं और वह अपना खर्चा निकालने के लिए यह काम

करते हैं और जो पैसे मिलते हैं वह अपने माता-पिता को दे देते हैं। बच्चों ने बताया कि, जब हमारा काम खत्म हो जाता है तो हम बंजारा मार्केट में दुकान लगाने का भी काम कर लेते हैं जिससे कि हमें रोज के 50 रुपए मिल जाते हैं ताकि हमारा दुकान लगाने का खर्च और दैनिक खर्चा चल जाता है।

अपनों की उपेक्षा और दुर्व्यवहार का शिकार होता मासूम बचपन

बातूनी रिपोर्टर- मौसमी, बालकनामा रिपोर्टर -सरीता

बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने जब गुरुग्राम की पलड़ा ढाणी समुदाय का दौरा किया तो तो वहां के बातूनी रिपोर्टर मौसमी ने बताया कि उसकी एक दोस्त है जिसके चार भाई हैं एवं हाल ही उसके पिता ने शराब पीकर उसकी माता के साथ बहुत ज्यादा लड़ाई-झगड़ा किया और मारपीट की जबकि वह पहले ऐसे नहीं थे। इतना ही नहीं उसके बाद उसके पिता ने उसकी माता को छोड़कर किसी दूसरी औरत से शादी भी कर ली है। बालकनामा रिपोर्टर ने उनसे आगे बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि मेरे पापा शराब पीकर मेरी माता जी को और हमें बहुत मारते थे और हाल ही में उन्होंने हमसे बहुत झगड़ा किया और यहां से चले गए और दूसरी जगह जाकर शादी कर ली। अब उन्होंने हमसे सभी प्रकार के रिश्ते खत्म कर लिये है। हालाँकि अब हमें यह सब अच्छा नहीं लगता क्योंकि हम

पांच भाई-बहन हैं, और हम चिंतित है की हमारी माताजी हमारा पालन-पोषण अकेले कैसे करेगी? क्योंकि पिताजी ने पैसा देने से बिल्कुल मना कर दिया है। हमारे साथ अब हमारे पिता नहीं रहते, अब हमें बहुत ज्यादा दिक्कत होती है क्योंकि मेरे दो छोटे भाई है जो तीन-चार साल के हैं। उनका मुझे ध्यान रखना पड़ता है। घर का खाना भी बनाना पड़ता है, क्योंकि मेरी माता जी दूसरे के घरों में साफ-सफाई का काम करने जाती है, इसलिए उन्हें घर के काम करने का समय भी नहीं मिलता है क्योंकि अगर वह काम करने नहीं जाएगी तो हमारा घर का खर्चा कैसे चलेगा और हम खाना कैसे खा पाएंगे? मेरे पापा ने जब से दूसरी शादी की है, मेरा बड़ा भाई जो की 14 साल का है वह काम करने जाने लगा है क्योंकि मम्मी के कमाई से घर का खर्चा व राशन भी नहीं हो पाता और हमें बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसलिए हमारी मजबूरी है की हम उसे भी कमाने भेजते हैं। सब बच्चे हमें चिढ़ाते भी हैं कि तुम्हारे पापा ने दूसरी शादी की है और तुम लोगों को छोड़कर चले गए हैं। तुम्हारे पापा कितने गंदे हैं, ये सब सुनकर हमें अच्छा नहीं लगता। हम चाहते हैं कि किसी तरह पापा वापस आ जाये और कोई भी पापा अपने बच्चों से दूर ना रहे, वो हमेशा अपने बच्चों से प्यार करे एवं उनका ख्याल रखें, उनकी जरूरत को पूरा करें क्योंकि बच्चों के प्रति मां-बाप का भी यह फर्ज होता है कि उन्हें अच्छा खाना कपड़े और अच्छी शिक्षा दें।

सड़क किनारे करतब दिखाकर पेट पालने को मजबूर कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर-राजकिशोर, बातूनी रिपोर्टर- विष्णु

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम के वजीराबाद की बस्तियों में दौरा करने के लिए गए तो वहां जाकर कुछ बच्चों से पता चला कि वहां एक लड़की है जो की रस्सी पर खेल दिखाती है और वह अपने सिर पर मटके रखकर रस्सी के ऊपर चलती है। वह अपने माता-पिता के साथ बस्तियों में खेल (करतब) दिखाने के लिए जाती है और खेल दिखाने से जो पैसे मिलते हैं वह अपने घर वालों को देती है। जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर को यह बात पता चली तो वे उस बालिका से मिलने के लिए वजीराबाद गए। जब पत्रकार राजकिशोर मौके पर पहुंचे तो देखा की सच में ही वह बच्ची अपने सिर पर मटके रखकर रस्सी के ऊपर चल रही थी और उसके माता-पिता उसके पास में खड़े थे और साउंड में गाना बजा कर वह बच्ची सबको अपने और आकर्षित कर रही थी ताकि लोग उसका खेल देखकर उसे पैसे दें। वहां जमा आसपास के लोगों में कुछ दुकानदार थे, वे 5-10 रुपए कलाकार को दे रहे थे ताकि उनका हौंसला ना टूटे और उनकी तालियों से भी माहौल को बढ़ावा मिल रहा था। दूसरी ओर वह छोटी बच्ची रस्सी पर बिना किसी सहारे चल रही थी। जब उस बच्ची से हमारे रिपोर्टर राजकिशोर ने बात की तो उस बच्ची ने बताया कि, हम पढ़ाई करना चाहते हैं, लेकिन हमारे पास पैसे नहीं है। यदि खेल-तमाशा दिखा कर घर वालों का सहयोग न करें तो पैसे कहां से आएंगे? यही हमारा

रोजी-रोजगार है, क्योंकि हमारे माता-पिता को और कोई काम नहीं आता है जिससे कि वह हमारा भरण-पोषण कर सकें। हम स्कूल जाकर पढ़ना चाहते हैं लेकिन अब क्या करें, हमारे माता-पिता हमारे खर्च नहीं उठा सकते हैं क्योंकि हमारे घर में दो भाई-बहन हैं और हमारे दादाजी भी हैं और उनकी तबीयत भी अक्सर खराब रहती है। उनकी दवाईयों में भी पैसे खर्च हो जाते हैं जो हमें खेल दिखाकर मिलते हैं। उसे बच्ची ने भावुकता से कहा की आखिर कौन यह काम करना चाहेगा? इतना खतरनाक काम करना हमारी मजबूरी है इसलिए हमें यह करना पड़ता है। हमारे रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि आपको ये सब करने में अर्थात रोड पर खेल दिखाने कई दिक्कतें भी आती होगी? तब उस बच्ची ने कहा कि हाँ बिल्कुल आती है, क्योंकि कोई भी रोड पर खेल दिखाने नहीं देता है। जब हम रोड पर खेल का सामान लगाते हैं तो आसपास के लोग हमें परेशान करते हैं और हमसे पैसे भी लेते हैं। अगर हम पैसे उन्हें नहीं देते हैं तो वह हमें वहां से भगा देते हैं। कोई बोलते हैं की हमें पहले खेल दिखाओ उसके बाद हमें रोड पर लगाने की अनुमति देते हैं, तब हम वहां पर खेल दिखाते हैं और जो कमाई होती है उस से घर का राशन खरीद लेते हैं और पूरे परिवार का पेट भरते हैं। मैं चाहती हूँ मेरे पापा की कोई अच्छी सी नौकरी लग जाए ताकि मैं इन सब से हटकर पढ़-लिख सकूं।

विपरीत परिस्थितियों में नियमित पढ़ाई करना भी है संघर्ष

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक, बातूनी रिपोर्टर : अरूण

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। अपने इन दौरों के दौरान जब रिपोर्टर दीपक जामडोली कच्ची बस्ती में लगे हाट-बाजार में पहुंचे तो वहाँ 12 वर्षीय बालक वरुण (परिवर्तित नाम) से भेंट हुई जो की वहां जोर-जोर से आवाज लगाकर गुब्बारे बेच रहा था। जब रिपोर्टर ने बालक से पूछा कि क्या आप सब स्कूल जाते हो एवं कौन सी कक्षा में पढ़ते हो ? तब बालक वरुण ने अपने जीवन के बारे में रिपोर्टर से कई अनुभव साझा किए और बताया की मेरे माता- पिता मजदूरी करते है लेकिन कभी - कभी दैनिक मजदूरी नही मिलती ऐसे में घर खर्च चलाना बहुत मुश्किल हो जाता है इसलिए मैं रविवार, मंगलवार और शनिवार को हाट-बाजार में गुब्बारे और खिलौने बेचता हूँ। मैं एक दिन में लगभग 15 खिलौने बेच देता हूँ और एक खिलौना लगभग 40 रुपए का बेचता हूँ। इस तरह में अपने परिवार की आर्थिक मदद करता हूँ इसके साथ ही अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए प्रतिदिन विद्यालय जाता हूँ और रविवार की तो पहले से ही छुट्टी होती है इसके

अलावा मैं मंगलवार और शनिवार को आधे दिन की छुट्टी लेकर हाट-बाजार में खिलौने बेचता हूँ। हालांकि हर बार मुझे नए-नए बहाने बनाकर आधे दिन की छुट्टी लेनी पड़ती है और लगभग 1 वर्ष से ऐसा ही चल रहा है। मेरे विद्यालय के शिक्षकों को मेरी मजबूरी का कारण पता है इसलिए वह मुझे आधे दिन की छुट्टी दे देते हैं और मैनें पिछले वर्ष अच्छे नंबरों से कक्षा 5 वीं की बोर्ड परीक्षा भी पास की है और अब मैं वर्तमान में कक्षा 6 में पढ़ रहा हूँ। बालक बहुत ही उत्साहित होकर बताता है कि मैं अपनी पढ़ाई को जारी रखूंगा और बड़ा होकर फौजी बनूंगा।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने पुलिस इंटरफेस के दौरान साझा किए अपने अनुभव

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

दिल्ली के जखीरा और अमर पार्क इलाकों के भ्रमण के दौरान सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार के साथ अपने अनुभव साझा किए। बच्चों ने बताया की उन्होंने चेतना संस्था द्वारा आयोजित उत्तर पश्चिमी दिल्ली के सराय रोहिल्ला पुलिस स्टेशन में पुलिस इंटरफेस कार्यक्रम में भाग लिया था, जिसका उद्देश्य बच्चों और पुलिस प्रशासन के बीच की दूरी को कम करना था। बच्चों ने बताया कि उन्होंने कानून और व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस की भूमिका, अपने अधिकारों और आपात स्थिति में पुलिस से संपर्क करने के तरीकों के बारे में सीखा। उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें अपराध से दूर रहने के महत्व और अवैध गतिविधियों में शामिल होने के परिणामों के बारे में शिक्षित किया गया। बच्चों में से एक, 11 वर्ष के बालक कलाम (परिवर्तित

नाम) ने कहा, "हमने पुलिस स्टेशन में नियंत्रण कक्ष, लॉक-अप और अन्य सुविधाएँ देखीं। हम पुलिस कर्मियों से भी मिले जिन्होंने अपने अनुभव साझा किए और मार्गदर्शन दिया।" बच्चों ने यह भी बताया कि वे अपने भ्रमण के दौरान जुवेनाइल वेलफेयर ऑफिसर (खहड) से भी मिले। जुवेनाइल वेलफेयर ऑफिसर ने उन्हें उनके अधिकारों और उन परिस्थितियों से निपटने के तरीके के बारे में बताया, जहाँ किसी व्यक्ति द्वारा उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है।

12 साल के सोनू (परिवर्तित नाम) ने कहा, "जुवेनाइल वेलफेयर ऑफिसर ने हमें बताया कि दुर्व्यवहार की रिपोर्ट कैसे करें और किसी भी कठिनाई का सामना करने पर मदद कैसे माँगें।" इसी प्रकार कुछ और बच्चों ने भी अपने अनुभव साझा किये जो निम्नानुसार हैः

"मुझे कभी नहीं पता था कि पुलिस अधिकारी इतने मिलनसार और मददगार होते हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि कैसे खुद की रक्षा करनी है और खतरे की स्थिति में क्या करना है।" - किशन कांत (परिवर्तित नाम) "पहले मैं पुलिस से डरता था, लेकिन अब मैं उनके पास जाने में सहज महसूस करता हूँ। वे हमारे मित्र हैं।" - रोहन (परिवर्तित नाम)

"मुझे पुलिस स्टेशन देखकर और अधिकारियों से मिलकर बहुत खुशी हुई। वे बहुत अच्छे और दयालु हैं।" - रेखा (परिवर्तित नाम) यह पुलिस इंटरफेस कार्यक्रम चेतना संस्था द्वारा बच्चों को कानून प्रवर्तन से जोड़ने और सभी के लिए एक सुरक्षित समुदाय को बढ़ावा देने के लिए एक सतत प्रयास है।

झुग्गी बस्तियों के बाहर जमा हो रहे कूड़े के ढेर से बच्चे हो रहे बीमार

बातूनी रिपोर्ट- मीनाक्षी, बालकनामा रिपोर्टर- सरिता

जब बालकनामा पत्रकार सरिता गुरुग्राम (हरियाणा) के घसोला समुदाय का दौरा करने गई, तब उनकी मुलाकात 12 वर्षीय मीना (परिवर्तित नाम) नाम की एक बालिका से हुई। मीना ने बताया कि, मैं घसोला समुदाय में स्थित चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर पढ़ती हूँ परंतु हम सब झुग्गी के लोग यहाँ कि फैली गंदगी से बहुत परेशान है। मीना ने बताया कि, हमारी झुग्गी बस्तियों में दूर-दूर से लोग आते हैं और कूड़ा-कचरा फेंक कर चले जाते हैं जिस कारण हम इस गन्दगी से फैली बदबू से बहुत ज्यादा परेशान रहते हैं और सांस लेने में भी तकलीफ महसूस करते है। इन सब कारणों से

यहाँ के बच्चे भी जल्दी-जल्दी बीमार पड़ जाते है क्योंकि उसकी बदबू के कारण उसमें बहुत से संक्रामक जीव जन्म ले लेते है और वह हमारे खाने और पानी की चीजों में शामिल होकर हमें नुकसान पहुँचाते है जिस कारण कई बार बीमार पड़ जाते है। हम इतने गरीब हैं कि हम अच्छे माहौल में कहाँ रह पाएंगे ?और हम जिस माहौल में रहते हैं यहाँ का हाल तो वैसे ही बेहाल है। यहाँ फैले कूड़े एवं गन्दगी से हमें मलेरिया,टाइफाइड, चिकनगुनिया इत्यादि जैसी बीमारीयां होने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है और हम गरीब होने के कारण अच्छे से इलाज से भी वंचित रहते हैं परिणामस्वरूप हम अनेक बीमारीयों से पीड़ित हो जाते हैं।

समुदाय में दिन पर दिन कूड़ा बढ़ता ही जा रहा है और साथ में गंदगी एवं बीमारियों की भी दिन पर दिन संख्या बढ़ती ही जा रही है। झुग्गी के बस्ती के लोग कुछ नहीं कर पा रहे हैं. यहां तक की झुग्गी के ठेकेदार भी कुछ नहीं बोलते हैं और कहते हैं आप लोग उन्हें बोलो क्योंकि हमें बस आपसे किराया लेने से मतलब रखते है और आप कैसे भी माहौल में रहो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता है और इस झुग्गी बस्ती के सामने कोई कूड़ा फेंकता है तो उसकी जिम्मेदारी आपकी है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आखिर हम बदनसीब बच्चों के साथ ही ऐसा क्यों होता है ?

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर : रेशमा

वर्तमान में कई बार देखा जाता है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को लोग अक्सर घृणा कि नजरों से देखते हैं और उनसे घिन करते है ' हाल ही में एक खबर सामने आई जिसमें सभी बच्चों द्वारा बताया गया की उन्हें अपने नजदीकी पार्क से बहुत लगाव हैं क्योंकि आजकल पार्क या गार्डन में पहले की अपेक्षा काफी बदलाव आए है जैसे पार्क में बच्चों के लिए खेलने के लिए तरह-तरह के झूले लगे हुए हैं ' इन झूलों में बच्चे झूलकर आनंद प्राप्त करते है लेकिन दूसरी ओर जब बच्चों से बातचीत की गई तो बच्चों ने अपनी व्यथा को व्यक्त करते हुए बताया कि हमें इन झूलों का लाभ उठाने को नहीं मिलता है क्योंकि जैसे हम पार्क के अंदर जाते हैं तो गार्ड अंकल हमें पार्क के अंदर नहीं आने देते हैं ' इतना ही नहीं उन झूलों पर झूल रहे अच्छे घर के बच्चों या उनके माता-पिता हमें देखते ही चिल्लाने लगते हैं और हमें यह सुझाव देते हैं कि मेरे बच्चों से दूर रहो जब हमारे बच्चे झूला झूल के चले जाएंगे तब तुम लोग झूला झूल लेना ' लेकिन कई बार ऐसा होता है कि हम बच्चे इंतजार करते रहते हैं और शाम हो जाती है परन्तु हमारा नंबर तक नहीं आता ' ऐसी परिस्थिति के सामना करते हुए बालकनामा के पत्रकार ने उन बच्चों से बात की जो अच्छे घर से हैं और पूछा की आप इन सड़क एवं कामकाजी बच्चों को झूला झूलने के लिए क्यों नहीं देते? तो उन बच्चों को कहना था कि इनके कपड़े से बहुत गंदी बदबू आती हैं अगर यह झूलों पर झूलने लगे तो यहां कीटाणु फैलने की संभावना हो सकती है ' पत्रकार ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों से पूछा कि आप बच्चे हैं ऐसी हालत में क्यों

रहते हो और अपने वस्त्र साफ-सफाई से क्यों नहीं रखते? तो बच्चों ने अपनी पीड़ा को बताते हुए कहा कि वर्तमान में जिस प्रकार से लगातार बारिश हो रही है उसकी वजह से हमारे माता-पिता हमारे वस्त्रों की सफाई नहीं कर पाते हैं ' दूसरी ओर हमारे पास इतने सारे कपड़े नहीं हैं कि हम सातों दिन अलग-अलग प्रकार के वस्त्र पहन सके, हमारे पास मुश्किल से दो-तीन वस्त्र है जो इस मौसम के कारण ऐसी स्थिति में है अगर हमारे माता-पिता एक वस्त्र को धोते हैं तो उसे सूखने में दो से तीन दिन लग जाते हैं क्योंकि हम रैन बसेरों में रहते हैं और यहाँ वस्त्र सुखाने की कोई सुविधा नहीं है क्योंकि यहाँ पर लोगो की अधिक संख्या होती हैं उन्हें भी ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ' हम मानते हैं कि हमारे वस्त्र से बदबू आती है लेकिन हम क्या करें? यह हमारी मजबूरी है, इसी वजह से हमारे वस्त्र भी गंदे दिखते हैं और जब हम पार्क से आ-जा रहे होते हैं तो सोसाइटी में रहने वाले लोग भी हम बच्चों को देखकर चिल्लाते रहते हैं ' कभी-कभी तो हम बच्चों को कबाड़ी और भिखारी कहके बुलाते हैं ' लेकिन फिर भी हम ऐसी समस्या को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं ' हमें यह लगता है कि हमारे साथ ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि हम रैन बसेरों में रहते है तथा भीख मांगने का कार्य करते हैं' हम चाहते हैं कि हमें भी समानता की नजरों से देखा जाए, हमारे साथ कोई भेदभाव ना करें, हमारी कुछ मजबूरीयां है जो धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी और हम भी शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को बदल सकेंगे '

भीख मांगना हमारा शौक नहीं, मजबूरी है

बालकनामा रिपोर्टर- शंभू

बालकनामा के पत्रकारों द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया जिस बैठक में बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और सभी बच्चों ने अपनी बातों को विस्तार से रखा। बैठक में सबसे बड़ी जो समस्या निकाल के सामने आई वह यह थी की अधिकतर बच्चे भीख मांगने के लिए इधर-उधर जाते हैं। जब पत्रकारों ने बच्चों से विस्तार से बातचीत की तो 12 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, हम अपनी मर्जी से भीख नहीं मांगते हैं। बल्कि भीख मांगना तो हमारी मजबूरी है, जिसके कारण हमें यह कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

राहुल ने बताया कि मेरे पिताजी घर में शराब पी के मस्त रहते हैं और माताजी कोठीयों में रोजमर्रा के काम करती हैं। लेकिन कई बार माताजी भी कोठी पर काम करने के लिए नहीं जाती हैं और हम बच्चों को मजबूरन भीख मांगने के लिए भेजती है। भीख मांगने के दौरान हमें तरह-तरह की परेशानियों के सामना करना पड़ता है जैसे की अगर बस में भीख मांगने जाते है तो पब्लिक हमें धक्का मार के बस से बाहर निकाल देते हैं और हमें चोर समझते हैं। अगर हम रेलवे स्टेशन के अंदर भीख मांगने के लिए जाते हैं तो पुलिस हम बच्चों को परेशान करती हैं और अगर हम खाली हाथ घर वापस आते हैं तो हमारे माता-पिता हमें गाली देते हैं तथा खाना-पीना नहीं देते हैं। हमारे साथ अत्याचार करते हैं, ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हुए अगर हम किसी का सहयोग भी लेना चाहे तो हमारे माता-पिता उनसे भी झगड़ा करने लगते हैं। इसीलिए हम बच्चों को कोई मदद करने के लिए तैयार नहीं होते, हम चाहते हैं कि हमसे यह भीख मंगवाने का काम ना करवाया जाए और हमें भी दूसरे बच्चों की तरह खेलने का अधिकार तथा घूमने फिरने का अधिकार व स्कूल जाने का अधिकार मिले ताकि हम बच्चे भी अपनी भविष्य को उज्ज्वल बना सके और आने वाले समय में हमें ऐसी परिस्थितियों से गुजरना न पड़े और न ही किसी के सामने काम के लिए और भीख मांगने के लिए हाथ फैलाना पड़े।

बकरियों का दूध बेचकर करते हैं घर का गुजारा

बातूनी रिपोर्टर- सुमन, रिपोर्टर- किशन

सड़क एवं कामकाजी बच्चे कई तरह का कामकाज करके अपने घर का पालन पोषण करते हैं परंतु कुछ दुष्ट व्यक्ति होते हैं जो उस कार्य को करने में खलल डाल देते हैं। इस कारण, इस बात को लेकर सड़क एवं कामकाजी बच्चे कई दिनों तक और चिंतित हो जाते हैं।

नोएडा की एक बस्ती में पत्रकारों ने देखा की बस्ती में अधिकतर लोगों के घरों में बकरियां मौजूद है और इस विषय पर बच्चों से बात की तो बस्ती में रहने वाली 15 वर्ष की बालिका ने बताते हुए कहा की, इस बस्ती में अधिकतर लोग तरह-तरह का काम करने के लिए जाते हैं परंतु कुछ बस्ती में रहने वाले बच्चे बकरियां पालने का काम करते है।

यहाँ अधिकतर लोगों के घरों में बकरियां मौजूद है, हमारी बस्ती के 500 मीटर की दूरी पर जंगल भी मौजूद है जहां पर बकरियों को भोजन खिलाने के लिए ले जाते हैं। कुछ बच्चे हैं जो सुबह से बकरी को जंगल की ओर ले जाते हैं।

कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो स्कूल जाते हैं तथा स्कूल से आने के बाद बकरियों को जंगल ले जाते हैं।बकरियों से हम बच्चों को दूध भी प्राप्त होता है, कुछ बकरियां है जो 1 से 2 गिलास दूध रोजाना देती है और यह दूध को आसपास की बिल्डिंग में रहने वाले लोगों को भी बेच देते हैं।

नोएडा में बकरी के दूध की अधिक महंगाई है अतः हम एक से दो गिलास जब दूध बेच देते हैं तो हमें डेढ़ सौ रुपए से लेकर दो सौ रुपए तक मिल जाते हैं, परंतु सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस बस्ती में जब कभी भी हम अपनी बकरियों को घर के बाहर बांधते हैं तो हमें यह डर सताता रहता है कि हमारी बकरी को कोई चोरी कर के ना ले जाए।

इस बस्ती में कई बार ऐसे लोग आते हैं जो बकरियों की चोरी कर लेते हैं और कई दिनों तक ढूंढने के बाद भी हमें वो नहीं मिल पाती। हमारी कई बकरियां ऐसे ही चोरी हुई है अतः इस चिंता के कारण हम अक्सर चिंतित रहते हैं।

माता-पिता की नशे की लत से प्रभावित हो रही किशोरी की शिक्षा

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार, बातूनी रिपोर्टर- अंशिका

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार उत्तर पश्चिमि दिल्ली के एन 86 लॉरिंस रोड़ इलाके का दौरा करने गए तो उन्हें वहां की बातूनी रिपोर्टर अंशिका ने बताया की उनके इलाके में एक दिल दहलाने वाली घटना में, दस वर्षीय बच्ची प्रेरणा (परिवर्तित नाम) को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया है और उसके माता-पिता की शराब की लत के कारण उसे घर के काम करने को मजबूर किया है। पढ़ाई के प्रति उसकी उत्सुकता के बावजूद, प्रेरणा के माता-पिता, जो दोनों शराबी हैं, उसे स्कूल में दाखिले के लिए आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने में विफल रहे हैं। इससे भी बदतर यह है कि उसे कभी-कभी अपने परिवार का भरण-

पोषण करने के लिए सब्ज़ियाँ बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है, क्योंकि उसके पिता अक्सर नशे में रहते हैं और उसकी माँ फैक्ट्री में काम करती है। यह दुखद स्थिति, विशेष रूप से बच्चों पर नशे की लत के विनाशकारी परिणामों को बताती है। प्रेरणा के माता-पिता की शराब पर निर्भरता ने न केवल उसका बचपन छीन लिया है, बल्कि उसके भविष्य को भी खतरे में डाल दिया है। शिक्षा तक पहुँच न होने के कारण, प्रेरणा के बेहतर जीवन की संभावनाएँ कम होती जा रही हैं। सरकार और सामाजिक संगठनों को यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए कि प्रेरणा को वह शिक्षा मिले जिसकी वह असल में हकदार है। इसके अलावा, पुनर्वास कार्यक्रम और सहायता सेवाएँ नशे की लत से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिससे उन्हें अपने बच्चों के लिए एक स्थिर वातावरण प्रदान करने में मदद मिलती है। प्रेरणा की कहानी नशे की लत से प्रभावित बच्चों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिए सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता की ओर इशारा करती है। क्या हम एक साथ काम करके बच्चों के विकास के लिए एक सुरक्षित और अधिक सहायक वातावरण बना पाएँगे?

बदलते मौसम के कारण बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

बातूनी रिपोर्टर देवी, रिपोर्टर किशन

घर के काम में और अन्य कार्यों में जब मन नहीं लगता तो मन ना लगने के कई कारण भी होते है। जब बालकनामा पत्रकार नोएडा की झुग्गी बस्तियों में पहुंचे और कुछ बच्चों से मिले तो कुछ ऐसे बच्चे थे जो स्वस्थ नजर नहीं आ रहे थे , चर्चा के दौरान बच्चों ने स्वस्थ ना होने के कई कारण भी बताए और इस विषय पर पत्रकारों ने सभी बच्चों से एक-एक करके विस्तार से जाना। 14 वर्ष की बालिका मैना (परिवर्तत नाम) ने बताया की वर्तमान में मौसम दिन पर दिन बदलता जा रहा है। इस बदलते मौसम में हम बच्चों को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। बदलते मौसम में जब तेज बारिश होने लगती है तो बच्चे बारिश के पानी से नहाने लगते हैं, इतना ही नहीं बच्चे सड़कों पर जाकर जो सड़कों पर नाले का पानी भर जाता है बच्चे उस पानी में लोटपोट कर नहाने लगते हैं जिसके कारण बच्चों के शरीर में फोड़े-फुंसी आदि निकल रहे हैं। कई बार दिन भर तेज धूप रहती है और दोपहर या शाम के समय कुछ मात्रा में बारिश की बूंदे गिरने लगती है और फिर अचानक से बारिश बंद हो जाती है और फिर जमीन की जो गर्म भाप होती है वह निकलती है और इस कारण वह भाप जब हम सांस लेते हैं तो वह शरीर में पहुंचती है और सांस लेने में भी दिक्कत होती है। इस बदलते मौसम के कारण स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इस कारण हम बच्चे अपने घर का घरेलू कामकाज करने में भी असमर्थ हो जाते हैं और कामकाज करने की शरीर में शक्ति तक नहीं रह पाती है। इतना ही नहीं बदलते मौसम के कारण बच्चे बीमार भी पड़ रहे हैं और इस कारण बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। इस बदलते मौसम से बचने के लिए हम बच्चों को आराम करने की आवश्यकता होती है।

खेलने की जगह पर पालतू जानवरों की गंदगी से बीमार बच्चे

बातूनी रिपोर्टर- सजनी, रिपोर्टर- किशन

आपने अक्सर देखा होगा की कुछ स्थान काफी साफ-सुथरे रहते हैं, परंतु कुछ बुद्धिजीवी उस जगह को गंदा करने में 1 मिनट का भी समय नहीं लगाते, लोग साफ-सुथरी जगह पर ही तरह-तरह की गंदी वस्तुयें, कूड़ा-कबाड़ा एवं मल-मूत्र इत्यादि कर देते हैं और फिर उस गंदी जगह पर बैठना या खड़ा होना भी पसंद नहीं करते। नोएडा सेक्टर 101 के नजदीक झुग्गी बस्तियों में पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने अपनी एक समस्या का बखान करते हुए कहा की वर्तमान में सितंबर का महीना चल रहा है और इस समय अधिकतर गर्मी और उमस पड़ रही है, इस कारण बस्ती में रहना बड़ा मुश्किल हो रहा है। दोपहर से लेकर शाम तक इतनी उमस पड़ने लगती है की एक मिनट भी नहीं रह सकते, इस उमस से बचने के लिए हम बच्चे ऐसी जगह का इंतजाम करते हैं जहां पर बिल्कुल साफ सुथरी जगह हो और पेड़ पौधे लगे हो और ऐसी जगह बस्ती के डेढ़ सौ मीटर की दूरी पर मौजूद है। उस स्थान पर सड़क भी मौजूद है सड़क के किनारे बड़े-बड़े पेड़ और घास जैसी जगह मौजूद है। जब ज्यादा उमस पड़ती है तो बस्ती के अधिकतर बच्चे एवं बड़े लोग उस साफ-सुथरी जगह पर जाकर बैठ जाते हैं परंतु सड़क के बगल में कुछ बड़ी-बड़ी बिल्डिंग मौजूद है बिल्डिंग में अधिकतर लोग कुत्ते -बिल्ली आदि पालते हैं और बिल्डिंग के लोग कुत्तों को इस स्थान पर घूमाने के लिए ले आते हैं। जिस स्थान पर हम लोग उमस से बचने के लिए अपना बिस्तर वगैहरा डालकर आराम करते हैं, तो यह लोग कुत्तों को लेकर रोजाना सड़कों पर और सड़क के बगल में पेड़ों के नजदीक घास पर मल-मूत्र करवा देते हैं।

बिल्डिंग से व्यक्ति अपने पालतू जानवरों को लेकर घूमने नहीं आते बल्कि वो दिन भर में लगभग 50 से ऊपर कुत्ते घुमाने की आड़ में उन्हें मल मूत्र करवाने के लिए इस स्थान पर लाते हैं। क्योंकि इस स्थान पर सुख-शांति है और साफ सफाई भी मौजूद रहती है। वे लोग सोचते हैं की यदि हम लोग इन जानवरों को जंगल में ले जाते है तो वहां कुत्तों के शरीर पर जंगली कीड़े-मकोड़े चढ़ जाने का खतरा रहता हैं। अतः इस कारण वे इन कुत्तों को इस स्थान पर लेकर आ जाते हैं, इतना ही नहीं इस स्थान पर अधिकतर गंदगी हो गई है और हम लोग अब ना तो इस स्थान पर अच्छे से बैठ पाते और ना ही सो पाते है।

आप तो यह जानते ही हैं बच्चे तो बच्चे होते हैं, बच्चे इस गंदी जगह पर खेलने के लिए चले जाते हैं और इस कारण बच्चे उस गंदे मल-मूत्र की चपेट में आ जाते हैं और इस प्रकार वो गंद में खेल रहे होते हैं। अब तो इससे बस्ती के बच्चे बीमारीयों का शिकार भी हो रहे हैं।

बच्चे कर रहे सामान डिलीवरी का काम

बालकनामा रिपोर्टरः राजकिशोर, बातूनी रिपोर्टरः सुमित

जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम के जलवायु क्षेत्र की बस्तियों में गए तो वहां जाकर कुछ बच्चों से पता चला कि वहां कुछ 14-15 साल के किशोर बच्चे डिलीवरी का काम करते हैं। जब हमारे रिपोर्टर ने पूछा कि उनके पास बाइक कहां से आती है और उनके पास लाइसेंस होता है या नहीं? बिना लाइसेंस वो वाहन कैसे चलाते हैं, इसके प्रतिउत्तर में ज्ञात हुआ की उनके पास बाइक नहीं होती है लेकिन वह जो बैटरी वाली स्कूटी किराए पर दी जाती है, वो बच्चे उन्हीं किराए वाली स्कूटी को किराये पर ले लेते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि,

कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो की स्कूल जाते हैं और वह डिलीवरी का काम करते हैं, और उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले की बात है कि जब एक लड़का सामान की डिलीवरी करने जा रहा था तब उसी दौरान बैटरी वाली स्कूटी बीच रास्ते में ही बंद हो गई और पीछे से बहुत सारी गाड़ियां आ रही थी जिससे कि उस बच्चे का एक्सीडेंट होते-होते बचा है। और तो और बच्चों ने यह भी बताया कि इसमें लाइसेंस की कोई आवश्यकता नहीं होती है यह कोई भी चला सकता हैं। चर्चा के दौरान पता चला की कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो की सुबह 4-5 बजे उठकर दूध डिलीवरी करने जाते हैं यद्यपि उनके माता-पिता उन्हें ये काम करने के लिए कदापि नहीं कहते हैं फिर भी वो काम करने चले जाते हैं। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले एक विद्यालय अध्यनरत लड़का जो की कक्षा नवीं में पढ़ता है एवं साथ ही वह डिलीवरी कंपनी ब्लिंककिट में काम भी करता था। एक दिन उसकी शिक्षिका ने स्कूल से उसे फोन किया कि आप स्कूल में क्यों नहीं आ रहे हो? तो उसने बोला कि मेरी तबीयत खराब है और अगले दिन ही वह झूठी रिपोर्ट लेकर स्कूल में पहुंच गया और फिर जब शिक्षिका ने उसकी रिपोर्ट देखी तो वह रिपोर्ट बिल्कुल झूठी निकली। कहने का आशय यह है की आर्थिक संकटों से जूझते ये बच्चे किसी न किसी प्रकार से गरीबी के दुष्चक्रों में फँसकर शिक्षा से दूर हो जाते है और उनके लिए क्या सही है और क्या गलत ये इसका फर्क तक भूल जाते है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

मेलों में बच्चे लगाते हैं दुकान, बेचते हैं चाऊमीन, खिलौने व अन्य सामान

बातूनी रिपोर्टर- अमन, बालकनामा रिपोर्टर- सरिता

गोगा कॉलोनी के पास एक मंदिर है जिसमें हर साल गोगा मेला लगता है, जब बालकनामा पत्रकार सरिता ने गुरुग्राम (हरियाणा) की इस कॉलोनी का दौरा किया तो पाया की वहां पर बहुत सारी झुग्गी बस्ती है और मेले मे छोटे - छोटे बच्चे खिलौने की रेहड़ी लगाते हैं और विभिन्न प्रकार के खिलौने, चाऊमीन, गोलगप्पे एवं इसी प्रकार की वस्तुएँ मेले में बेचते हैं एवं कुछ बच्चे तो इस दौरान भीख भी मांगते हैं। मेले में ऐसे ही एक बच्चे से जब पत्रकार सरिता ने बातचीत कि तो उस बच्चे ने बताया कि मेरा नाम रमन (परिवर्तित नाम) है और मैं 14 वर्ष का हूँ। मैं मेले में खिलौने बेचने का काम करता हूँ और अपने माताजी- पिताजी की मदद करता हूँ जिससे मुझे बहुत खुशी मिलती है कि मैं अपने माता पिता की मदद कर पा रहा हूँ। मुझे पढ़ने का शौक भी है, और मैं स्कूल पढ़ने भी जाता हूँ। फिर हमारी पत्रकार ने पूछा आपको यह सब काम करना कैसा लगता होता है ? और आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

इस प्रकार बातचीत करते हुए अमन ने कहा कि मैं अपने माता - पिता की मदद करता हूँ जिससे मुझे बहुत अच्छा लगता है क्योंकि हमारे माता-

पिता इतने अमीर नहीं है जो कि हमारी हर जरूरत पूरी कर सके। लेकिन अगर हम उनके साथ हाथ बटाएँ तो हमारे कुछ सपने जरूर पूरे हो सकते हैं। और इस प्रकार माताजी और पिताजी को भी मदद मिल जाती है जिससे उन्हें भी जिम्मेदारियों का ज्यादा भार नहीं उठाना पड़ता है। रही बात मेरी तो मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ जिससे मैं अपने परिवार और जरूरतमंद लोगो का कम से कम दाम में इलाज कर सकूँ। इससे गरीब लोगों की भी कुछ मदद हो जाएगी क्योंकि वह गरीब होने के कारण अच्छे से इलाज नहीं करवा पाते हैं। झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोग अधिकतर बीमार ही रहते हैं और उन्हें अमूमन अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है। अतः मैं बड़े होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ और अपने समुदाय या अन्य जरूरतमंद गरीब लोगो का मैं कम से कम दाम में इलाज करना चाहता हूँ।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने जाना शिक्षक दिवस का महत्व

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक, बातूनी रिपोर्टर : दामिनी

हम सभी जानते हैं की शिक्षक अपने छात्रों के भविष्य को आकार देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किंडरगार्डन से लेकर विश्वविद्यालय तक वे ही हैं जो शिक्षा प्रदान करते हैं और हमें हर महत्वपूर्ण ज्ञान से अवगत करवाते हैं। इसके अलावा, वे बच्चों को नैतिक मूल्यों के बारे में भी सिखाते हैं और हमारे नैतिक मूल्यों को आत्मसात करते हैं। इसी क्रम में प्रत्येक वर्ष समाज में शिक्षकों की भूमिका की सराहना और सम्मान देने के लिए 5 सितंबर को शिक्षक दिवस का आयोजन किया जाता है। इस दिन छात्र अपने शिक्षकों का धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हैं। विद्यालयों और कॉलेजों में कई तरह के कार्यक्रम, जैसे भाषण, निबंध लेखन, और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आयोजित की जाती हैं, जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों भाग लेते हैं। इसी तरह इस बार वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों एवं सरकारी स्कूल के प्रधानाचार्य और कक्षा अध्यापकों ने मिलकर हर्ष और उल्लास के साथ शिक्षक दिवस मनाया और शिक्षकों ने बच्चों को कविता,कहानी, खेल व अन्य रोचक गतितिधियां भी करवाई। 13 वर्षीय बालिका दामिनी ने बताया की शिक्षक दिवस पर हमारी कक्षा अध्यापिका को हमने हमारे चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र

पर आमंत्रित किया और बच्चों के द्वारा बनाया गया क्राफ्ट उपहार में दिया एवं केक कटिंग भी की गई। इतना ही नहीं हमारी अध्यापिका ने सभी बच्चों को बैलून से रोचक गतिविधि भी करवाई। 14 वर्षीय बालक दिलीप बताता है कि 'मैं बड़ा होकर पीटीआई शिक्षक बनना चाहता हूँ' इसलिए पहली बार मैनें शिक्षक दिवस पर पीटीआई सर का रोल किया और जाना की शिक्षक बनने के लिए बहुत मेहनत की जरूरत पड़ती है । 13 वर्षीय पूनम बताती है की 'पहली बार केंद्र पर हमारे स्कूल के प्रधानाचार्य शिक्षक दिवस मनाने आए और उन्होंने सभी बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय आने एवं अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का संदेश दिया तो हमें बहुत अच्छा लगा।

आखिर हमारे साथ ही ऐसा क्यों होता है?

बालकनामा रिपोर्टर- शम्भू

आइए हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि जो बच्चे कूड़ा-कबाडा बीनने का कार्य करते हैं वह अपना दिन कैसे गुजारा करते हैं और उनको किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है तब जाकर वह चंद पैसे कमा पाते हैं ' बातूनी रिपोर्टर से बातचीत करने पर पता चला कि यह बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए रेलवे स्टेशन व पार्क के आस-पास, अर्थात जहां पर ज्यादातर पब्लिक आती-जाती हैं जैसे सार्वजनिक स्थान रेलवे स्टेशन, बस अड्डा आदि इन स्थानों पर जाकर ये कबाड़ा बीनते हैं। कबाड़ा में जैसे की पानी की बोतल तथा पन्नी व प्लास्टिक के ग्लास आदि। बातूनी रिपोर्टर का कहना था कि यह काम करने में बच्चों को बहुत तकलीफ होती हैं जैसे स्टेशन की ओर जब यह बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए रेलगाड़ी में चढ़ते हैं तो टी.टी.ई. और पुलिसकर्मी इन बच्चों को स्टेशन से जाने को कहते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि अगर यह बच्चे यह काम नहीं करेंगे तो इनका घर का खर्चा कैसे चलेगा? सुनने में आया है कि कई बार तो पुलिसकर्मी बच्चों पर हाथ भी उठा देते हैं। इतना ही नहीं, पार्क में कुछ युवा अपने साथियों के साथ बैठे होते हैं और वह अश्लील क्रियाओं में संलग्न होते हैं तो जब यह बच्चे जाते हैं तो इनको देखकर गाली-गलौज करते हैं। जिसकी वजह से इन बच्चों को बहुत परेशानी होती है, बच्चों को कहना है कि अब तो यह कबाड़ा भी हमें बहुत मुश्किल से मिलता है। अगर हम यह काम नहीं करेंगे तो हम क्या खाएंगे? इस परेशानी से बच्चों ने छुटकारा पाने के लिए गली-मोहल्ले जैसे राशन की दुकान के आस-पास गत्ते बीनने का प्रयास किया तो वहां पर भी इनको कई तरह के समस्याओं का सामना करना पड़ा। जैसे की ज्ञात हुआ कि वहां पर रहने वाले कुछ दुष्ट लोग इन पर कुत्ते छोड़ देते हैं, जिसकी वजह से यह बच्चे अपनी जान जोखिम में डालकर भागते हैं। बच्चों का कहना हैं कि यह हमारी मजबूरी है, अगर यह काम नहीं करेंगे तो हमारे माता-पिता हमसे जबरन पहले की तरह भीख मंगवाने का कार्य करवा सकते हैं और हो सकता है कि जिस प्रकार से हम अभी स्कूल जा रहे हैं वह स्कूल जाने पर भी पाबंदी लगा दें। क्योंकि स्कूल जाने से पहले हम सभी बच्चे बस में और गुरुद्वारे के आस-पास भीख मांगने का कार्य करते थे। लेकिन जब से हमारा दाखिला सरकारी स्कूल में सामाजिक संस्था चेतना द्वारा कराया गया है तब से हमारे माता-पिता में काफी परिवर्तन हुआ और हमारे माता-पिता हमसे सिर्फ कबाड़ा बिनवाने का ही कार्य करवाते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि हमारे साथ ऐसा न हो और हमें सुरक्षित कबाड़ा बीनने दिया जाए ताकि हम अपने भविष्य में शिक्षा प्राप्त करके आगे बढ़ सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बकरी चराता मासूम हो रहा शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर : काजल, बातूनी रिपोर्टर : श्याम

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की मांग्यावास बस्ती का दौरा किया तब रास्ते में एक बालक को बकरियां चराते हुए देखा। रिपोर्टर ने बालक से बात करने की कोशिश की और उससे पूछा कि तुम स्कूल नहीं जाते हो क्या और बकरियां चराने अकेले ही आते हो या परिवार का कोई सदस्य साथ आता हैं? तब 12 वर्षीय बालक घनश्याम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मेरे माता-पिता कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और जब हम गांव से आए थे तो 5 बकरियां भी ये सोचकर साथ लेकर आए थे की उनका दूध बेचकर ही कुछ पैसे कमा लेंगे। यहां पर माता-पिता को कोई अच्छा काम नहीं मिला और इस प्रकार उन्होनें कबाड़ा बीनने का काम शुरू कर दिया। इसके लिए वे सुबह घर से जल्दी निकल जाते है और शाम तक वापस आते है इसलिए बकरियां चराने की जिम्मेदारी मेरी होती हैं और बकरियों के खाने का खर्चा

कम हो इसके लिए मैं रोज सुबह इन्हें घर से बाहर चराने के लिए अकेला ही चला आता हूँ। जब हम गांव में रहते थे तो मैं स्कूल जाता था लेकिन यहां माता - पिता की कमाई कम है इसलिए मैं बकरी चराकर उनकी मदद करता हूँ ताकि दूध बेचने पर जो पैसे आएंगे वे घर में काम आ सकें और प्रश्न ये भी उठता है की यदि मैं स्कूल गया तो बकरियों की देखभाल कौन करेगा? इसके अलावा बालक ने बहुत ही उदासीनता से बताया कि कुछ दिनों पहले ही जब मैं बकरी चरा रहा था तो एक बकरी सड़क के दूसरी ओर जा रही थी और सामने की तरफ तेजी से एक गाड़ी वाला आ रहा था जिसने उसे टक्कर मार दी और बकरी वहीं पर मर गई और गाड़ी वाले ने तो पलट कर भी नही देखा बल्कि वहां से भाग गया।इस प्रकार बेवजह ही एक बकरी के मरने से घर में लगभग 5,000 रुपए का नुकसान हो गया।

फ्लाईओवर के निर्माण ने छीनी बच्चों के सिर से छत, कई परिवार हुए बेघर

रिपोर्टर किशन

जैसा कि बालकनामा के पत्रकार कई राज्यों के एक-एक इलाके में दौरा करके सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं को आप तक पहुंचाते हैं। वैसे ही दक्षिणी दिल्ली की बस्तियों में दौरा करने के लिए जब पत्रकार वहां पर पहुंचे तो पत्रकारों ने देखा कि वहां पर सब कुछ मिट चुका है। हालाँकि इस दौरे से पहले भी पत्रकार उस स्थान पर दौरा करने के लिए कई बार पहुंच चुके हैं और पत्रकारों ने पाया था कि उस स्थान पर कुछ महीने पहले लगभग 700 से 800 झुग्गियाँ मौजूद थी। परन्तु जब इस बार उन्होंने दौरा किया तो सभी झुग्गियाँ टूट चुकी थी और दोबारा दौरा करने के दौरान उस स्थान पर कुछ लोग और कुछ ही बच्चे मौजूद थे। तब उस स्थान पर पत्रकारों ने 16 वर्ष की बालिका बेला (परिवर्तित नाम) से बात की और जानने का प्रयास किया कि यह सभी झुग्गिया कहां गई? तो बालिका ने बताया की, हम भी इस स्थान पर रहते हैं। हमारी झुग्गी बस्तियों के बगल से नदी बहती है और झुग्गियों के ऊपर से फ्लाईओवर का निर्माण हो रहा है। कुछ

फ्लाईओवर बन चुके हैं और कुछ पर अभी भी कार्य चल रहा है। इस स्थान पर जितनी भी झुग्गी बस्तियों में रहने वाले व्यक्ति मौजूद थे सभी तरह-तरह का कार्य करते थे। जैसे खिलौने बेचना, फैक्ट्री में काम करना, तरह-तरह की ठैलियों पर कार्य करना, कबाड़ी का कार्य करना आदि। जितने भी लोग थे सभी की प्राधिकरण ने झुग्गियां तोड़ दी और सभी लोग अलग-अलग स्थानों पर पहुंच गए। जैसे कि कुछ लोगों के संबंध उनके रिश्तेदारों से जुड़े हुए थे, तो वह वहां चले गए और कुछ लोग बगल के गांव के मौजूद किराए के कमरों में पहुंच गए। अब इस स्थान पर वही लोग रुके हुए हैं जिन लोगों का कबाड़ी का माल रखा हुआ है। और हम भी यहाँ तभी तक मौजूद है जब तक हमारा कबाड़ी का सामान बिक नहीं जाता। प्राधिकरण के अधिकारी हमें भी यहाँ से हटने के लिए कह गए हैं और ऐसे हम भी अपना कबाड़ी का सामान बेचकर किसी दूसरे स्थान पर पहुंच जाएंगे।

रैन बसेरों में भी नहीं मिल पाता उचित आसरा, होती है अश्लील हरकतें

बालकनामा रिपोर्टर- शम्भू

आइए बात करते हैं सड़क पर रहने वाले कामकाजी बच्चों कि, की यह अपने दिनचर्या कैसे व्यतीत करते हैं? लगभग दो-तीन साल पहले इन बच्चों के परिवार फ्लाईओवर के नीचे तथा सड़क के फुटपाथ पर गुजारा करते थे। धीरे-धीरे बदलाव आया, क्योंकि इनको इस स्थान पर रहने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। जैसे कई बार पुलिस इनको तंग करते थे और मौसम खराब होने की वजह से बारिश की चपेट से भी गुजरना पड़ता था। कभी-कभी तो इनका सामान भी कोई उठा कर ले जाता था, अतः परेशानियों को देखते हुए एक कदम उठाया गया की इनको रैन बसेरा में शिफ्ट किया गया। जहां पर यह सुरक्षित रह सकते हैं लेकिन जब रैन बसेरों में रहने वाले अभिभावक व बच्चों से बातचीत किया गया तो बच्चों ने अपनी बात को रखते हुए कहा कि हमें रैन बसेरों के अंदर भी काफी तरह के परेशानियों से गुजरना पड़ता है क्योंकि रैन बसेरों के अंदर लोगों की संख्या इतनी ज्यादा है की इनके अंदर बहुत गर्मी लगती हैं जबकि इनके अंदर काफी सारे पंखे लगे हुए हैं लेकिन उन सब से भी कोई फर्क नहीं पड़ता। इतना ही नहीं बच्चों ने यह भी बताया कि वहां पर किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं है जैसे रैन बसेरों के अंदर बेड तो लगे हुए हैं परन्तु उन बेड पर सब ऐसे ही सो जाते हैं। दुख की बात

यह भी है कि इनके आसपास कुछ लोग ऐसे भी हैं जो खुलेआम अश्लील हरकतें करते हैं जिसकी वजह से बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, और इसके लिए कोई ठोस कदम अभी तक नहीं उठाया गया है। इस वजह से हम बच्चों पर भी इन सबसे बुरा प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि जिस प्रकार से बच्चे किशोरावस्था से गुजरते हैं तो उन बच्चों को खासकर इन चीजों से ज्यादातर परेशानी होती हैं। वे इस उम्र जैसा देखते हैं वैसे ही हरकतें एक दूसरे के साथ करने का प्रयास करते हैं तथा इसी कारण कुछ लड़के, लड़कियों से अश्लीलता से बातचीत करने का प्रयास करते हैं। बच्चों को कहना था कि, ये रैन बसेरे सिर्फ बारिश व धूप से सुरक्षित कर रहें है बाकी वहां किसी भी तरह के लाभ नहीं है। इसीलिए हम चाहते हैं कि रैन बसेरों के अंदर हर एक परिवार के लिए छोटे-छोटे कमरा बना दिया जाए ताकि कोई किसी से किसी भी प्रकार की हरकत करता है तो वह चार दिवारी के अंदर हो ताकि उससे हम बच्चों पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

बढ़ते कदम संघ ने बचाया एक बच्चे का जीवन

बातूनी रिपोर्टरः मोक्षिना

यह घटना गुड़गांव के घाटा गांव की है, वहाँ एक बच्ची जिसका नाम लक्ष्मी है और वह बढ़ते कदम संघ की सदस्य भी है, वह एक दिन शाम को घर का कुछ सामान लेने दुकान जा रही थी तभी अचानक उसने देखा कि एक बच्ची बहुत जोर-जोर से रो रही है। वो बहुत परेशान और उदास है और उसके पास काफी भीड़ इकट्ठा है, क्योंकि लक्ष्मी बढ़ते कदम की सदस्य है, और समय-समय पर मीटिंग के माध्यम से उसे पता है कि ऐसे बच्चों की कैसे मदद करनी है, उनसे कैसे बात करनी है इत्यादि। इसीलिए लक्ष्मी बिना समय गंवाए तुरंत उस बच्ची के पास गई उससे बात करने की कोशिश की लेकिन बच्ची बहुत डरी और सहमी थी और उसके आसपास भीड़ भी इकट्ठा हो गई थी। इसलिए बच्ची घबराहट के मारे कुछ भी नहीं बोल पा रही थी, लेकिन लक्ष्मी ने उसे भरोसा दिलाया और उससे बात की। अंततः वह सिर्फ अपने माता और पिता का नाम ही बता पाई, लक्ष्मी ने सोचा यदि इस बच्ची की सहायता नहीं की गई तो इस बच्ची के साथ कोई दुर्घटना हो सकती है। कोई इसका शोषण भी कर सकता है या कोई गलत आदमी बहला-फुसलाकर अपने साथ भी ले जा सकता है। क्योंकि लक्ष्मी आए दिन टीवी और न्यूज में सुनती रहती है कि बच्चों के साथ गलत हुआ, इसलिए लक्ष्मी ने जो नंबर बढ़ते कदम मीटिंग से याद किए थे उस नंबर से मदद लेने का निर्णय लिया और अपने घर के फोन से 112 नंबर पर कॉल करके पूरी समस्या विस्तार से बता दी और कहा कि आप लोग जल्द से जल्द आने का कष्ट करें ताकि बच्चों के साथ में कुछ भी गलत ना होने पाए। आपको तो पता ही है मासूम बच्चे अपराधी लोगों का आसानी से शिकार हो जाते हैं, फिर जब तक पुलिस नहीं आई लक्ष्मी उस बच्ची के साथ

रही और उसे हौंसला देती रही। जब पुलिस आई तो लक्ष्मी भी उस बच्ची के साथ में आस पास के कुछ लोगों के साथ बैठकर थाने गई ताकि बच्ची घबराएं नहीं। रास्ते में लक्ष्मी उस बच्चे को ढाँढस देती रही, पुलिस भी अपने कार्य मे जुट गई जगह-जगह फोन के माध्यम से, वायरलेस के माध्यम से एक बच्ची मिलने की सूचना दी। कुछ ही देर में पुलिस की और लक्ष्मी की मेहनत रंग लाई और उस बच्ची के अभिभावक मिल गए। अभिभावक को देखकर बच्ची खुशी से रोने लगी, बच्ची को पाकर अभिभावकों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस अवसर पर पुलिस ने बच्ची एवं मां-बाप को जरूरी हिदायत दी और कहा की इस तरह की लापरवाही कितनी भारी पड़ सकती थी आप लोगों को? ये तो लक्ष्मी की सूझबूझ और समझदारी का परिणाम है कि हमें समय रहते सूचना मिल गई और बच्ची किसी गलत हाथों में नहीं पड़ी। नहीं तो बच्ची को ढूंढना बहुत मुश्किल कार्य होता, बच्ची के अभिभावक ने लक्ष्मी का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और कहा की तुम्हारा यह एहसान हम जिंदगी भर नहीं चुका सकेंगे, साथ ही वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने लक्ष्मी को शाबाशी दी और उसके इस कार्य के लिए उसका हौंसला बढ़ाया और कहा तुम्हें इन सब नंबरों की जानकारी कैसे हुई? तो लक्ष्मी ने गर्व से कहा की उसने यह सब बढ़ते कदम की मीटिंग से सीखा है। मैं बढ़ते कदम मीटिंग में जब भी जाती हूँ तो वहां हेल्पलाइन नंबर बताए जाते हैं और ये हमने याद कर लिए है, उसके बाद लक्ष्मी घर वापस वापस आ गई, वहां पूरे मोहल्ले वालों ने लक्ष्मी की बहुत प्रशंसा की, कि आज लक्ष्मी की वजह से एक बच्ची सकुशल अपने घर पहुंच गई। लक्ष्मी ने कहा की यह सब में बढ़ते कदम की वजह से कर पाई जिस वजह से मुझे पुलिस के नंबर याद हुए और इसमें चेतना संस्था का भी बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि उनकी वजह से ही हम लोग पुलिस से मिलते रहते हैं और अब हमें पुलिस अपनी दोस्त लगती है।

बारिश ने किया फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को जीना दुश्वार

बालकनामा रिपोर्टर- शम्भू

इस बारिश ने दिल्ली और नोएडा में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे, जो फुटपाथ पर रहते हैं उनका जीना दुश्वार किया हुआ है। हालांकि हम सभी जानते हैं कि वर्तमान में मौसम किस तरह से करवट बदल रहे हैं। आए दिन बारिश कभी दिन में, तो कभी रात में होती हैं, जिसकी वजह से फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को और उनके परिवारों को कई परेशानियों को सामना करना पड़ रहा है। जब हमारे बालकनामा के रिपोर्टर ने इन बच्चों से मुलाकात कर इनसे बातचीत की तो पता चला की अधिक समस्या नोएडा में रहने वाले बच्चों की है। क्योंकि नोएडा में रहने वाले बच्चे बिल्कुल खुले आसमान के नीचे रहते हैं और वह लगातार इस मौसम के शिकार हो रहे हैं। बच्चों ने अपना दुखड़ा बताते हुए कहा कि यहां पर तो कोई रैन बसेरा भी नहीं है जहां पर हम बच्चे अपने परिवार के साथ रह सकते हैं। 12 वर्षीय आसमा (परिवर्तित नाम) का कहना था कि हम में से ज्यादातर बच्चे काम करते हैं और तभी जाकर हमारे घरों का गुजर-बसर हो पाता हैं, और उसी के पैसों से खाने-पीने के लिए राशन लाते हैं। लेकिन इस मौसम के कारण हमारे राशन भी खराब हो गए हैं जिसके कारण हमें भूखे रहना पड़ता है। आसमा ने यह भी बताया कि यहां पर काफी छोटे बच्चे भी है जिसकी उम्र 3 से 4 साल है। इन बच्चों को बारिश से बचाने के लिए हमारे माता-पिता तिरपाल का प्रयोग करते हैं लेकिन कई बार ये तिरपाल से ढँकने के बाद भी भीग जाते हैं जिसकी वजह से इन्हें सर्दी-जुकाम व बुखार का शिकार होना पड़ता हैं परिणामतः यह बच्चे हमारे माता-पिता को काफी परेशान करते हैं अतः ये पूरे पूरे दिन रोते रहते हैं। बच्चों को कहना यह भी था कि जो हम कबाड़ा बीनकर लाते हैं वो अधिकांशतः मार्केट तथा रेलवे स्टेशन से होते हैं। बारिश के कारण सारा कबाड़ा भीग जाता हैं जिसके कारण अगर अगले दिन हल्का मौसम में बदलाव आता है तो हम इसे सुखाने का प्रयास करते हैं। तो कई बार पुलिस वाले यह कह देते हैं कि यहां से सारा सामान हटाओ, यहां क्यों गंद फैला रहे हो ? और कई बार तो सारा कबाड़े को लात मार को फेंक देते हैं। इस परेशानी से हम चाहते हैं कि हमें मुक्ति मिले, सरकार हमारे लिए कोई

ऐसी व्यवस्था करें ताकि हम बच्चों को ऐसी समस्या से ना गुजरना पड़े और हम अपना जीवन सुरक्षित गुजार सके।इस बारिश ने दिल्ली और नोएडा में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे, जो फुटपाथ पर रहते हैं उनका जीना दुश्वार किया हुआ है। हालांकि हम सभी जानते हैं कि वर्तमान में मौसम किस तरह से करवट बदल रहे हैं। आए दिन बारिश कभी दिन में, तो कभी रात में होती हैं, जिसकी वजह से फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को और उनके परिवारों को कई परेशानियों को सामना करना पड़ रहा है। जब हमारे बालकनामा के रिपोर्टर ने इन बच्चों से मुलाकात कर इनसे बातचीत की तो पता चला की अधिक समस्या नोएडा में रहने वाले बच्चों की है। क्योंकि नोएडा में रहने वाले बच्चे बिल्कुल खुले आसमान के नीचे रहते हैं और वह लगातार इस मौसम के शिकार हो रहे हैं। बच्चों ने अपना दुखड़ा बताते हुए कहा कि यहां पर तो कोई रैन बसेरा भी नहीं है जहां पर हम बच्चे अपने परिवार के साथ रह सकते हैं। 12 वर्षीय आसमा (परिवर्तित नाम) का कहना था कि हम में से ज्यादातर बच्चे काम करते हैं और तभी जाकर हमारे घरों का गुजर-बसर हो पाता हैं, और उसी के पैसों से खाने-पीने के लिए राशन लाते हैं। लेकिन इस मौसम के कारण हमारे राशन भी खराब हो गए हैं जिसके कारण हमें भूखे रहना पड़ता है। आसमा ने यह भी बताया कि यहां पर काफी छोटे बच्चे भी है जिसकी उम्र 3 से 4 साल है। इन बच्चों को बारिश से बचाने के लिए हमारे माता-पिता तिरपाल का प्रयोग करते हैं लेकिन कई बार ये तिरपाल से ढँकने के बाद भी भीग जाते हैं जिसकी वजह से इन्हें सर्दी-जुकाम व बुखार का शिकार होना पड़ता हैं परिणामतः यह बच्चे हमारे माता-पिता को काफी परेशान करते हैं अतः ये पूरे पूरे दिन रोते रहते हैं। बच्चों को कहना यह भी था कि जो हम कबाड़ा बीनकर लाते हैं वो अधिकांशतः मार्केट तथा रेलवे स्टेशन से होते हैं। बारिश के कारण सारा कबाड़ा भीग जाता हैं जिसके कारण अगर अगले दिन हल्का मौसम में बदलाव आता है तो हम इसे सुखाने का प्रयास करते हैं। तो कई बार पुलिस वाले यह कह देते हैं कि यहां से सारा सामान हटाओ, यहां क्यों गंद फैला रहे हो ? और कई बार तो सारा कबाड़े को लात मार को फेंक देते हैं। इस परेशानी से हम चाहते हैं कि हमें मुक्ति मिले, सरकार हमारे लिए कोई ऐसी व्यवस्था करें ताकि हम बच्चों को ऐसी समस्या से ना गुजरना पड़े और हम अपना जीवन सुरक्षित गुजार सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

शादी-बारातों में बच्चे बजाते हैं ढोल

बातूनी रिपोर्टर- राहुल, रिपोर्टर- किशन

जब बालकनामा पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 76 के नजदीक की बस्तियों में दौरा किया तो दौरा करने के दौरान बस्तियों में कई बच्चे अलग-अलग कार्य करते हुए नजर आए। तब पत्रकारों की नजर कुछ ऐसे बच्चों पर जा पहुंची जहाँ कुछ बच्चे ढोल बजाने का काम कर रहे थे। उनमें से कुछ बड़े बच्चे कुछ छोटे बच्चों को ढोल बजाना सिखा रहे थे तब पत्रकारों ने उन में से कुछ बच्चों से जाकर बातचीत की। 14 वर्ष के रमेश (परिवर्तित नाम) ने बताया की हमारी बस्तियों में कुछ बड़े भैया हैं जो शादी, बारात, बर्थडे पार्टी,नवरात्रि, छठ पूजा एवं गणेश चतुर्थी आदि त्योहारों पर ढोल बजाने के लिए जाते हैं। अधिकतर लोगों को पता है कि इस बस्ती में ढोल बजाने वाले बच्चे एवं बड़े लोग रहते हैं, तो वह हमें पहले ही शादी, बारात एवं त्योंहार आदि पर बुकिंग देकर चले जाते हैं। समय के अनुसार ढोल बजाने का पैसा अलग-अलग होता है, या यूँ कहें की समय के अनुसार ही पैसा तय किया जाता है कि हमें कितनी देर ढोल बजाना होगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि जितने समय बजाने का तय कर लिए हैं उस समय से अधिक समय तक ढोल बाजवा लेते हैं, और अधिकतर शादी बारात में लोग शराब आदि पीकर मौजूद रहते हैं। कई लोग तो ढोल बजाते समय बदतमीजी पर भी उतर आते हैं और मजबूरन हमें ढोल बजाना बंद करना

पड़ जाता है, जो मालिक होता है फिर इस तरह वह इतने पैसे नहीं देता जितने हमने तय किए थे फिर मजबूरन ज्यादा समय तक ढोल बजाने के बाद पूरे पैसे मिल पाते हैं। परंतु खुशी इस बात की भी रहती है कि शादी बारात में जब लोग नाचते हैं तो पैसों से न्यौंछावर भी दे देते हैं। जब थोड़ी अधिक न्यौंछावर मिल जाती है तो वह हमारी ऊपरी मेहनत के पैसे मिल जाते हैं। रमेश ने और आगे बताते हुए कहा जब कोई ढोल बजाने की बुकिंग नहीं आती तो ढोल वाले भैया बच्चों को झुग्गी के खुले स्थान पर ढोल बजाना सीखाते हैं। ढोल में दो चीज होती है नासिक और ताशा, जिसमें अधिकतर आवाज होती है, ढोल वाले भैया अलग-अलग ढोल बजाने के तरीके सीखाते हैं और जब बच्चे ढोल बजाना सीख रहे होते हैं तो अधिकतर बस्ती के बच्चे आकर नाचने लग जाते हैं। यह देखकर काफी मजा आता है और जब कभी बुकिंग ज्यादा आ जाती है तो फिर हम भी अलग-अलग बुकिंग पर ढोल बजाने के लिए निकल जाते हैं।

अर्धनग्न शरीर पर पट्टी बांधकर भीख मांग रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर-शम्भू

हम कुछ ऐसे बच्चों के बारे में आज आपसे बात करेंगे जिनकी मुश्किलों के बारे में शायद आप नहीं जानते होंगे। बालकनामा के रिपोर्टर दौरा करने के लिए एक स्थान पर जा पहुंचे, जहां बातूनी रिपोर्टर ने उन्हें अवगत करवाया कि यहां पर बच्चों की समस्या यह है की यहाँ अधिकतर बच्चे ऐसे हैं जिनके तन पर कपड़े नहीं होते हैं। ये सिर्फ हाफ पैंट पहन के भीख मांगने का कार्य करते हैं। ये बच्चे ऐसा क्यों करते हैं? यह अब हम आपको बता रहे हैं। आजकल कुछ लोग बच्चों को भीख देना बंद करके उसके स्थान पर बच्चों को खाने-पीने की चीज दे देते हैं, जिसकी वजह से इन बच्चों के माता-पिता खुश नहीं है, क्योंकि यह बच्चे ही एक ऐसा जरिया है जो माता-पिता को कमा कर दे रहे हैं। बातूनी रिपोर्टर ने यह भी बताया कि यह बच्चे अपने तन पर कपड़े इसलिए नहीं रखते ताकि लोगो को इन पर दया आए और इन्हें चीज देने के बजाय कुछ पैसे दें दें। अधिकतर ये बच्चे अपने अपने शरीर पर पट्टी बांध लेते हैं ताकि लोगों को लगे

की यह बच्चे जख्मी हैं और इन्हें वाकई में खाने-पीने की चीज की जरूरत नहीं बल्कि पैसों की आवश्यकता है और लोग मजबूरन इन्हें पैसे दें दें। लेकिन ऐसे कामों में बच्चों को तरह-तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि 8 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जिस प्रकार सभी तरफ बारिश का मौसम चल रहा है। ऐसे में हमारे शरीर पर कपड़ा ना होने की वजह से हमें ठंड लगती हैं और कई बार तो हम बारिश के चपेट में आने की वजह से भीग जाते हैं तो हमें सर्दी-जुकाम भी हो जाते हैं। लेकिन जब हम यह परेशानी अपने माता-पिता को बताते हैं तो हमारे माता-पिता हमारी बातों को सुनकर भी अनसुना कर देते हैं। ऐसे हालातों में हम कैसे छुटकारा पाएं? हमें कुछ समझ नहीं आता। हम पढ़ाई-लिखाई करना चाहते हैं लेकिन हम में से कई बच्चों के कोई भी दस्तावेज नहीं है, सुनने में आया है कि अब सरकारी स्कूल में दाखिला लेने के लिए जन्म प्रमाणपत्र की मांग की जा रही है जो हमारे पास नहीं है। हम चाहते हैं कि हमारी कोई मदद करें ताकि हम ऐसी समस्या से छुटकारा पा सकें।

बस्ती में छाया आवारा कुत्तों का आतंक, बच्चे हो रहे भयभीत

बातूनी रिपोर्टरः आरती, रिपोर्टरः किशन

आजकल सड़क पर आप जहां भी नजर डालेंगे हर जगह आपको आवारा पशु देखने को मिल जायेंगे परंतु यदि बात करें गली-मोहल्लों की तो इनमें आपको सबसे ज्यादा कुत्तों की संख्या अधिक देखने को मिलती है। बालकनामा रिपोर्टर द्वारा नोएडा की एक बस्ती में दौरा करने के दौरान बस्ती में रहने वाली 9 वर्ष की बालिका (कायल) ने बताया की हम जहाँ अपनी बस्ती में रहते हैं वह बस्ती काफी बड़ी है और इस बस्ती में आवारा कुत्तों की संख्या बहुत अधिक है। हमारी बस्ती की जिस गली में भी आप पहुंच जाएंगे वहां काम से काम आपको पाँच या पाँच से अधिक कुत्ते देखने के लिए मिल ही जायेंगे। इस बात की यूँ कहना और उचित होगा की इन गलियों में कुत्तों की अपेक्षा कुतिया अधिक संख्या में मौजूद है। ये जानवर हर 6 महीने में बच्चे पैदा करते है और वो भी एक नहीं बल्कि एक बार में लगभग 6 से अधिक बच्चे उत्पन्न होते है और वह यहाँ-वहाँ घूमते हुए बड़े होते जाते हैं और ऐसे में इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। इनकी बढ़ती संख्या से समस्या यह आती है कि बस्ती में अधिक कुत्ते होने के कारण बच्चे गली-मोहल्लों में जाने से डरते हैं। जब उन्हें अपने घरेलू कामकाज के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है तो बच्चों के मन में यह सवाल आता है कि बाहर कुत्ते घूम रहे हैं और वे उन्हें कहीं काट ना ले, मोहल्ले में जब हम बच्चे स्कूल के लिए या कोई अन्य कार्य के लिए जा रहे होते हैं तो कुछ ऐसे खतरनाक कुत्ते होते हैं जो अपने आप भनक जाते हैं और वह अनायास ही काट लेते हैं। इतना ही नहीं औसतन हर तीन-चार दिन में बस्ती में जंगली कुत्ते बच्चों को काट ही लेते हैं। इस कारण हर गली के बच्चों में यह डर बैठा हुआ है की यदि हम घर से बाहर निकलेंगे तो कुत्ते काट लेंगे। दिन भर ये कुत्ते एक दूसरे को देखकर भोंकते रहते हैं और ऐसे दिन भर बस्ती में इन कुत्तों के आवाज का आतंक गूंजता रहता हैं, इस भय से भी घर से बाहर निकलने का किसी का मन नहीं करता।

हालाँकि इन कुत्तों को पकड़ने के लिए यदा-कदा गाड़ी भी आती है परंतु गाड़ी तब ही आती है जब कोई बस्ती का व्यक्ति शिकायत करता है वरना उससे पहले कोई कार्यवाही नहीं होती और फिर जब गाड़ी कुत्तों को पकड़ कर ले जाती है तो ऐसे में जिस कुत्ते के साथी को वो पकड़ ले जाते हैं वह कई दिनों तक भोंकते ही रहते हैं बल्कि वो इससे पीड़ित होकर और भी भयानक व आक्रामक हो जाते है।

मैगी नूडल्स व पास्ता बेचने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक, बातूनी रिपोर्टरः रहीम

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और कली का भट्टा कच्ची बस्ती में देखा की 9 वर्षीय बालक रईस (परिवर्तित नाम) एक खाली पड़ी लकड़ी की छोटी सी दुकान में बैठा था और उसके पास एक पतीले में नूडल्स रखे हुए थे जिसे देखकर प्रथम दृष्टया ऐसा लगा की शायद बालक ने स्वयं के खाने के लिए उसे वहां रखा होगा लेकिन कुछ ही देर में उस थड़ी (दुकान) पर आसपास से बच्चे आने लगे और बालक रईस छोटे से अखबार के टुकड़े में बच्चों को 2, 5 और 10 रुपए में नूडल्स बेचने लगा तब रिपोर्टर ने बालक रईस से बात की और पूछा की आप यह काम क्यों करते हो और एक दिन में इससे कितना पैसा कमा लेते हो? एवं आप स्कूल क्यों नही जाते हो ? तब बालक ने बताया कि वह इससे एक दिन में 30 से 40 रुपए कमा लेता है और वह यह काम पर सिर्फ अपनी

माता के कहने पर करता है। आगे उसने कहा की मेरा आधार कार्ड नही बना है इसलिए मेरा विद्यालय में दाखिला भी नहीं हो पाया और माता का कहना है कि घर पर बैठकर क्या करेगा? यदि कुछ काम करेगा तो घर में पैसो की कुछ मदद तो हो पायेगी, इसलिए वह मुझे सुबह कभी मैगी नूडल्स तो कभी पास्ता बनाकर दे देती है और यहां थड़ी पर बैठने को कहती है। इस प्रकार मैं बस्ती के बच्चों को पैसे में बनी बनाई मैंगी बेचता हूँ और जो पैसे आते हैं फिर अपनी माँ को घर खर्च के लिए दे देता हूँ। विडंबना है की जहाँ बच्चों को बचपन में खेलने-कूदने, पढ़ने-लिखने के अवसर प्राप्त होने चाहिए वहाँ दस्तावेज के अभाव और आर्थिक तंगी के कारण अभिभावक ही बच्चे का बचपन नष्ट कर रहे है और बालश्रम की ओर धकेल रहे है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

हुक्का पीना बच्चों को कर रहा आकर्षित, नशे की गिरफ्त में मासूम

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार, बातूनी रिपोर्टर - अंशिका

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर ने अपने सामुदायिक भ्रमण के दौरान कुछ ऐसा देखा कि उसे देखकर अपनी आंखों पर भरोसा ही नहीं हुआ। जब बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम के नाथूपुर की बस्तियों में विजिट कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे अपनी इस कम उम्र में हुक्का पी रहे थे और बहुत ही शान के साथ उसका धुआँ हवा में उछाल रहे थे। यह दृश्य देखकर बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर हैरान और परेशान हो गए, उन्होंने उन बच्चों से बात करने का निर्णय लिया और इस तरहं जब बच्चों के पास में जाकर उनसे बात की तो उन बच्चों ने कहा कि हमें हुक्का बहुत ही आकर्षित करता है। इसे देखकर इसे पीने का मन करता है, जैसे बड़े लोग अपने मुंह से धुआं निकालते हैं वैसे ही हम भी धुँआ निकालते हैं और इसे पीकर अलग ही मजा आता है, इससे मन एकदम फ्रेश हो जाता है। जब राजकिशोर ने पूछा की आप लोगों को इसे पीने की आदत कैसे लग गई ? तब बच्चों ने कहा की इसे देखकर हमें अच्छा लगता है क्योंकि ये इतना आकर्षक और शानदार बना होता है की इसे देखकर इसे पीने का मन करने लगता है और इसे पीकर धुआँ निकालने में बहुत ही मजा आता है। यहां पर सभी लोग इसे पीते हैं, राजकिशोर ने कहा लेकिन यह बहुत ही खतरनाक है इससे आपको बीमारियां भी हो सकती है, आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। इसका धुआँ नुकसान देता है और जो कि हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है इसलिए आप लोग इसे ना पिया करें बल्कि इससे दूर रहा करें। क्योंकि अभी आप लोग बहुत छोटे बच्चे हैं, इसलिए आपको इसके बारे में ज्यादा कुछ मालूम नहीं है। हमें नशीली वस्तुओं से दूर रहना चाहिए नहीं तो आने वाले भविष्य में हम इनके आदी हो सकते हैं जिससे कि नशे करने से हमारा शरीर भी कमजोर होता है और अनर्गल पैसे भी खर्च होते हैं इसलिए आप लोग आगे से हुक्का ना पिए और ऐसे घातक नशीले पदार्थों से दूर ही रहें ।

आपातकालीन सेवाओं को समय पर सूचित कर प्रदीप ने बचाई कई जानें

बातूनी रिपोर्टर : प्रदीप

दिल्ली के जखीरा समुदाय में रहने वाले बच्चों के पास खेलने के लिए जगह तो वैसे ही नहीं है क्योंकि दोनों तरफ रेल की पटरी बिछी हुई है, तो ये बच्चे वहां पर शौचालय के सामने मिट्टी के ढ़ेर से निर्मित एक टीले पर ही जाकर खेलते-कूदते हैं और खुश रहते हैं। जन्माष्टमी वाले दिन प्रदीप ने बताया कि हम लोग उस टीलेनुमा पहाड़ पर खेल रहे थे तो वहां से हमने देखा कि सामने एक फ्लावर है और वहां से यातायात के कई साधन आ-जा रहे थे की तभी हमने देखा कि वहां से एक पैसेंजर बस निकल रही थी और बस चलते-चलते पुल के ऊपर ही खड़ी हो गई और बस का इंजन अचानक से बहुत तेज गर्म होने लग गया तो ड्राइवर ने सभी पैसेंजर को बस खाली करने के लिए कहा। जैसे ही सब पैसेंजर बस से उतर रहे थे उसी के बीच में बस के अंदर आग लग गई। इस प्रकार जखीरा समुदाय के बच्चों के खेलते-खेलते बस के ऊपर नजर पड़ी तो बच्चों ने शोर मचाना शुरू कर दिया की बस में आग लग गई।

प्रदीप ने कहा कि बस में मैंने देखा कि तीन बच्चे और एक ड्राइवर फँसे हुए थे जिनकी कोई भी मदद नहीं कर रहा था। ऐसे में प्रदीप ने जोर-जोर से चिल्लाकर कहा कि बस में तीन बच्चे और एक व्यक्ति फँसे हुए हैं उनकी भी कोई हेल्प करो परंतु जखीरा सेंटर के बच्चे जो यहाँ पहाड़ पर खेल रहे थे उन्होंने देखा बस में आग लगी हुई है तो वह भी डर के मारे इधर-उधर भाग गए और अपने से बड़ों की सहायता मांगने लगे। वहीं पर बच्चों के साथ खेलने वाले बालक प्रदीप ने अपनी सूझबूझ का सही इस्तेमाल करते हुए हेल्पलाइन नंबर का उपयोग किया और उसने अपने घर वापस भाग कर एक व्यक्ति से फोन लेकर एम्बुलेंस को फोन किया और उन्हें आंखों देखा जखीरा बस्ती का हाल बताया और बताया कि हमारे यहां पर बस में आग लग गई है जिसमें सभी पैसेंजर तो उतर गए हैं परंतु तीन बच्चे और एक अंकल बस के अंदर फँसे हुए हैं, हेल्पलाइन नंबर पर सामने से एक महिला कर्मचारी बात कर रही थी उसने बच्चे से वहां का पता पूछा और कौन से फ्लाईओवर पर आग लगी है यह पता किया। बच्चों ने सही रास्ता बताते हुए फायर ब्रिगेड और एम्बुलेंस दोनों पर फोन किया और तुरंत ही फायर ब्रिगेड और एंबुलेंस 10 से 15 मिनट के बीच में जखीरा समुदाय फ्लाईओवर पर पहुंच गई और उन्होंने बस में लगी आग में फँसे बच्चों और ड्राइवर की हेल्प की, फायर ब्रिगेड ने बस की आग बुझाई और एम्बुलेंस ने घायल लोगों को बाहर निकाला। परंतु बस में जो बच्चे फँसे हुए थे, एम्बुलेंस में डॉक्टर और वार्ड बॉय ने उन लोगों को बस से जब नीचे उतारा तो प्रदीप ने बताया कि हमने देखा बच्चों की त्वचा झुलस गई थी और ड्राइवर के कपड़े भी जल गए थे और शरीर पर चमड़ी बहुत बुरी तरह से जल के झुलस गई थी और गिर रही थी वह चारों लोग बहुत गंभीर स्थिति में पाए गए थे। फायर ब्रिगेड की गाड़ी बस की आग बुझा रही थी एवं एम्बुलेंस ने तुरंत उनको वहां पर प्राथमिक उपचार दिया और वहां से चारों को गंभीर हालत में अस्पताल लेकर चले गए। इन बच्चों की सहायता प्रदीप तभी कर पाया जब वह चेतना संस्था में पढ़ने के बाद अपने चारों अधिकारों और हेल्पलाइन नंबरों के प्रति जागरूक हुआ। प्रदीप ने कहा कि मैं चेतना संस्था को धन्यवाद कहता हूँ कि उन्होंने हमें हमारे हेल्पलाइन और अधिकारों के प्रति जागरूक किया और इस प्रकार मैं चार लोगों की जान बचा पाया।

खुलें में स्नान करती बालिकाओं के साथ हो रही छेड़खानी की घटनायें

ब्यूरो रिपोर्ट

आपने लोगों के मुँह से कभी न कभी ये जरूर सुना ही होगा की अपनी चीज तो अपनी ही होती है अर्थात खुद की चीज और पराई चीज में जमीन आसमान का अंतर होता है। वैसे ही दूसरे के यहाँ किराये पर रहने में और अपने खुद के घर में रहने में भी जमीन आसमान का फर्क होता है। हम बात कर रहे हैं उन बच्चों की जो बच्चे अपने परिवारों के साथ झुग्गी बस्तियों में रहते हैं, झुग्गी बस्ती में जब बालिकाओं को कोई एक या अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता है तो वह उसका सामना कैसे कर पाते हैं? नोएडा की एक बस्ती में जब बालकनामा पत्रकार पहुंचे और उन्होने देखा कि उस बस्ती में नहाने के लिए शौचालय जैसी कोई सुविधा मौजूद नहीं है तब जाकर बस्ती की 14 वर्ष की बालिका सुलोचना (परिवर्तित नाम) से बात की तो बालिका ने कहा की, इस स्थान पर हम रहते हैं एवं इस स्थान पर लगभग 40 से 45 झुग्गियाँ स्थित है, और झुग्गी बस्ती में रहने वाले अधिकांश लोग कामकाज वाले लोग हैं। इस बस्ती में सबसे बड़ी समस्या यह है की यहाँ एक बड़ी सी पानी की होद स्थित है, वह काफी बड़ी और काफी चौड़ी है। जब बस्ती की अधिकांश बालिकाएं उसमें नहाने के लिए जाती है तो होद के आसपास में कोई ऐसी बंद झुग्गी या बंद कमरे की सुविधा नहीं है जहां पर हम बालिकाएं अच्छे से स्नान कर सके, परंतु जब हम बालिकाएं स्नान कर रही होती है या घर के बर्तन-कपड़े आदि धो रही होती है तो बस्ती के कुछ आवारा लड़के आकर हमसे कुछ दूरी पर बैठ जाते है और हमें देख-देख कर अपना मन बहलाते और तरह-तरह के इशारे करते है। तब शर्मिंदा होकर हमें उनकी तरफ देखना बंद करना पड़ता हैं और नहाते समय जब हम कपड़े बदल रहे होते हैं तो हमें और कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। हमारे घर के बड़े सदस्य जैसे माता-पिता, बड़े भाई आदि अपने-अपने कामकाज पर चले जाते हैं इसलिए ये लोग इस बात का फायदा उठाते हैं और हम बच्चे छोटे पड़ जाते हैं इस कारण हम कुछ नहीं कर पाते है। एक बार की घटना है बस्ती की एक महिला स्नान कर रही थी, एक बड़े व्यक्ति ने उसकी मोबाइल में वीडियो और फोटो खींच ली और उस व्यक्ति ने इंस्टाग्राम पर साझा कर दी तब जाकर कुछ दिन बाद उस महिला के पति को पता चला तो इस बात पर काफी हंगामा हुआ और लड़ाई भी हुई। बस्ती के ठेकेदार को भी कई बार इस बात को लेकर कहा है परंतु वह भी इस बात को यूँ ही टाल देता है।

बालकनामा समाचार पत्र की संपादकीय बैठक में बच्चों ने लिया भाग

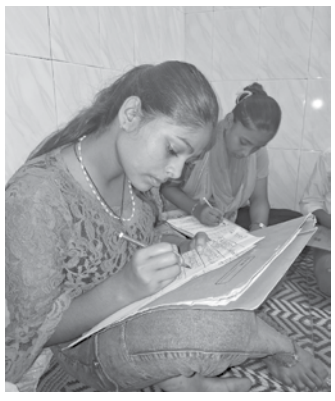

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

सितंबर माह की बालकनामा समाचार पत्र की संपादकीय बैठक 13 सितंबर 2024 को ईआरसी केंद्र, केशवपुरम में आयोजित की गई। आमतौर पर यह बैठक गौतम नगर स्थित चेतना संस्था के मुख्यालय में होती है, लेकिन कुछ बदलती परिस्थितियों के कारण इस बार यह ईआरसी में आयोजित की गई। बैठक में बालकनामा के रिपोर्टर हंस कुमार और संपादक किशन के साथ पंद्रह बच्चे शामिल हुए, जो अपने-अपने केंद्रों के लीडर हैं। बैठक की शुरूआत परिचय से हुई, उसके बाद संपादकीय बैठक के उद्देश्य और स्थान पर चर्चा हुई। बालकनामा रिपोर्टर किशन ने बैठक के महत्व और इसके दौरान क्या-क्या होता है, इस बारे में बताया। इसके बाद प्रतिभागियों ने बालकनामा, बढ़ते कदम, बढ़ते कदम की रसीद और हेल्पलाइन नंबरों के बारे में जानकारी साझा की, जिसमें चाइल्डलाइन हेल्पलाइन नंबर और उसका उपयोग शामिल है। उन्होंने पुलिस और फायर ब्रिगेड के नंबरों पर भी चर्चा की। बैठक में इस बात पर चर्चा की गई कि समाचार कैसे एकत्र और साझा करें, और प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्रों में बच्चों के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने इन मुद्दों को कैसे संबोधित किया जाए, इस पर अपने अनुभव और विचार विमर्श किए। इसके बाद "गिलास वाला खेल" नामक खेल खेला गया और फिर नाश्ता भी किया गया। अंत में, किशन ने बच्चों के लिए एक टेस्ट आयोजित किया और इस प्रकार बैठक समाप्त हुई। इस बैठक का उद्देश्य बच्चों को बालकनामा समाचार पत्र में योगदान देने और अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करने के लिए ज्ञान और कौशल से सशक्त बनाना था। बच्चों ने टीम वर्क, संचार और नेतृत्व के महत्व के बारे में सीखा। उन्हें अपने विचार साझा करने का अवसर भी मिला, जिसे बालकनामा के आगामी अंक में दिखाया जाएगा। अगली संपादकीय बैठक अक्टूबर 2024 के लिए निर्धारित की गई है, जहाँ बच्चे बालकनामा के अगले अंक के लिए अपने लेखों और कहानियों पर चर्चा करेंगे।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471